International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(1): 55-57
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 02-01-2026
Accepted: 21-01-2026
Publish : 22-01-2026

पुष्पा देवी पटेल
शोधार्थी , (हिंदी विभाग),
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड
विश्वविद्यालय,छतरपुर (म.प्र.)

शोध निर्देशक
डॉ.रघुनाथ पाल
सहायक प्राध्यापक, (हिन्दी),
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस,नौगांव,
जिला – छतरपुर, (म.प्र.)

Correspondence:
पुष्पा देवी पटेल
शोधार्थी , (हिंदी विभाग),
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड -
विश्वविद्यालय,छतरपुर (म.प्र.)

बुंदेली लोक-साहित्य और खेत सिंह यादव 'राकेश' के काव्य में प्रकृति-सौंदर्य

पुष्पा देवी पटेल, डॉ.रघुनाथ पाल

शोध-सार — बुंदेली लोक कवि खेतसिंह यादव 'राकेश' का काव्य बुंदेलखंड की प्रकृति संपदा ग्रामीण जीवन लोक- संस्कृति का सूक्ष्म, संवेदनशील एवं सौन्दर्य पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है। उनके साहित्य में प्राकृतिक दृश्य, ऋतु वर्णन, ग्राम परिवेश, लोक सौन्दर्य और आध्यात्मिकता का गहरा और भावनात्मक समन्वय में मिलता है। यह शोध-पत्र काव्य में निहित प्रकृति सौंदर्य और सौंदर्य चेतना सामग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

कुंजी-शब्द— प्रकृति सौंदर्य, बुंदेली काव्य, लोक साहित्य, ऋतु वर्णन, ग्रामीण परिवेश, खेत सिंह यादव।

प्रस्तावना—भारतीय लोक साहित्य में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि या साज-सज्जा मात्र नहीं है, बल्कि जीवन और संस्कृति की जीवनदायी आत्मा रही है। बुंदेलखंड के जनजीवन, कृषि, ऋतु चक्र, ग्रामीण और प्रकृतिक परिवेश गहरे जुड़े लोककवि खेतसिंह यादव 'राकेश' ने अपने काव्य में प्रकृति सौंदर्य, संवेदना और लोकचेतना का आधार बनाया है। उनका काव्य प्राकृतिक अनुभूतियों को मानवीय भावनाओं और लोकजीवन के साथ जोड़ता है।

1. खेत सिंह यादव के काव्य में प्राकृतिक दृश्य —: कवि ने अपने साहित्य संसार में नदी, पर्वत, वृक्ष, खेत, आकाश, फूल, चांद, सूर्य, वर्षा और हरियाली इत्यादि का जीवंत मनोहर चित्रात्मक वर्णन किया है। उनकी रचनाओं में प्रकृति स्थिर नहीं है, बल्कि सजीव और गतिशील जीवन शक्ति के रूप में उभरती है।

- r

यहां कवि ने चांद का अद्भुत चित्र प्रस्तुत करके पाठक मनोभूमि में अमिट छाप प्रस्तुत की हैं।

2. ऋतु- वर्णन और सौंदर्य चेतना— राकेश जी के काव्य में ऋतु वर्णन केवल प्राकृतिक परिवर्तन नहीं बल्कि मानवीय अनुभूतियों का प्रतीकात्मक रूप है- जैसे-

१. बसंत-ऋतु– "यह केवल एक प्राकृतिक मौसम नहीं, बल्कि उमंग और तरंग का ऐसा ऊर्जास्त्रोत है, जो जनजीवन में प्रेम, उत्सव, नवजीवन और अनुभूति-विस्तार का संवाहक बनता है।"

- "तैसहि उषा गई अब फूल, मन की चिंता गई सब भूल।
  मिट गये तन के सारे सूल, दुख लगै भगन।
  जैसे देखी लगी बसंत, ना रओ कोयल सुख को अंत।"[2]

२. ग्रीष्म ऋतु– कवि ने अपनी सौंदर्य चेतना का उसकी प्रवृत्ति के अनुसार 'तपन की पीड़ा' को विरह के भाव बिंब से सजाया है।

- "चैत और अपरैल कै, कहिये कौन हवाल।
  जेठ तपन भारी परी, आये ना नंदलाल।"[3]

३. शरद ऋतु– जहां बसंत का होना हृदय को एक नई उमंग तथा उल्लास से भर देता था, वही शरद का अनुभव में वैराग्य, शांति और आत्मचिंतन जैसी भावनाओं का प्रेरक हो जाता है। इस तरह ऋतु वर्णन उनके काव्य का एक श्रेष्ठ अंग बनकर सौंदर्य तथा जीवन-दर्शन का माध्यम बन जाता है।

3. ग्रामीण परिवेश और प्रकृति का सौंदर्य – कवि के काव्य में ग्राम जीवन और प्रकृति का अटूट संबंध दृष्टिगोचर होता है। जहां भी उसके पग-पग में उसके दृष्टांत प्रस्तुत करते है,वहाँ खेत, किसान, बैल, कुआँ, नदियाँ, कुत्ता, बिल्ली, चूहा इत्यादि के ऐसे गतिशील एवं सजीव चित्र प्रस्तुत करते है। यहां प्रकृति सौन्दर्य इतना सरल सहज और स्वाभाविक है, कि 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल' ने अपने काव्य शास्त्रीय निबंध 'कविता क्या है' में जिस मूल व आदिम रूपों की धारणा प्रस्तुत की वह यहां साकार हो जाती है।

जैसे-१. खेती और बैल जैसे प्रकृति के वरदान ग्रामीण जीवन की आत्मा है। कवि ने इनके न होने से खेती की भरतार अभापूर्ण मानी है-

- "बिन बैलन खेती कबहूँ, होती ना भरतार।
  भरतार अगर चाहत हो करो किसानी
  बैलन की एक जोड़ी रख लेव दीवानी"[4]

२. इसके आलावा कवि ने बुंदेली संस्कृति के खाद्य व्यंजन 'दूध एवं महेरो' का सौंदर्य लेकर काव्य की रस शक्ति में बुंदेली ग्राम संस्कृति हृदय-विदारक रूप-तत्व लिया है।

- "अब तक चराई गैयाँ खा दूध महेरो"[5]

३. गांव में सुबह जागने का कार्य प्रकृति ने 'मुर्गा की बांग' दिया है, जिसकी बांग से ग्रामीण लोगों की भोर होती है।

- "भोर होत ही मुर्गा बोलत, गेंगा शोर करै भारी।।[6]

४. सृष्टि में व्याप्त सभी चेतन और अवचेतन की आभा अपनी स्वाभाविकता में रमणीय है। मानव दृष्टि उसे अपने स्वानुसार सुंदर व आकर्षक बनाता है, जिसमें उसके साथ अनुकूल संबंध बनाकर उसे हितकारी माना,किंतु कवि की आत्म-दृष्टि उस सौंदर्य को भी स्थान देती जिसमें लोगों की कुरुपता अद्‌भुत होती है। कवि अपनी उस काव्यानुभूति तथा प्राकृत अनुभूति का समन्वय उसे 'सहजानुभूति' की पृष्ठभूमि में व्याप्त संपूर्ण का आलिंगन करता है। यहां कवि ने दीमक, कौआ, सुड़ी, सुआर, हिरण, कुत्ता, बिल्ली, उल्लू तथा नीलकंठ सभी को ग्रहण कर काव्य की सृष्टि का विस्तार किया है।

दीमक, कौआ, सुड़ी, सुआर,अरु हिरण कृषि का दुश्मन है।
गलगल चूहा तोता गिरुआ ओले बेरी है भारी।
कुत्ता, बिल्ली, उल्लू, श्यामा, नीलकंठ है हितकारी ।।[7]

प्रकृति यहां केवल सौंदर्य दृश्य नहीं है, बल्कि बुंदेलखंड की गतिशील संस्कृति की आत्मा बनकर उभरती है।

4. **लोक सौंदर्य और प्रकृति भावबोध –** कवि ने अपनी दृष्टि को उसे प्रकृति के सौंदर्य को सहेजा है, जिसमें ग्राम्य नारी अपनी सुंदरता का व्यायाम करती है। कवि ने चुरिया, ककवा, ककहई, बिंदी और गुरिया तक अपनी चेतना का विस्तार किया।

" टिकली बूँदा, मुंगीपोत के गुरिया देखो है कारे।
ककवा , ककहई, छल्ली,छल्ला,डबिया ऐना है तारे।
पैर लेव जे पक्की चुरिया हरे झुमका न्यारे।।" [8]

प्रकृति अपना सौन्दर्य लोकजीवन के साथ उसके काम-धंधे, पालन - पोषण के साथ-साथ उसके मनोरंजन उसकी भाषा की उक्तियों-मुहावरे, लोकोक्तियों में अपना सौन्दर्य खोजती है। कवि की सूक्ष्म व गहन दृष्टि इसे भी स्थान देती है।

" दाने चार तिली के नैयां, बम्बई भाव मंगाबैं।"[9]
" ना बनो बैल बिन सींगन के।"

सुंदरता का सबसे कोमल सरल तथा अपनी सहज प्राप्ति से लोक सौंदर्य का अभिन्न अंग बन चुके फूलों की मनोहर छवि को कवि ने चित्रांकन करते हुए विभिन्न सुमन(सु-मन) हृद्योद्क, मर्मस्पर्शी प्रेमानुभूति आस्था उपासना मनोरंजन और दर्शनोभिलाषा का सहचरी बनाया है।

"टोर मन के फूल निहार, मरुआ गुलबांम कचनार।
गेदा, नरगिस, जूही, अनार, पिवरइया।
सूरजमुखी गुलाब जो केवड़ा देत बहार।।"[10]

5. प्रकृति और आध्यात्मिक सौंदर्य — कवि ने सौंदर्य की छटा को अनुभूतियों की उस शांति ध्यान समर्पण आत्म -चेतन से अभिभूत सुंदर भावनात्मक संवेदनात्मक तथा महा व्याप्ति का अद्‌भुत चित्र अकेरा है। जहां चारों दिशाएं अपने-अपने जीवन की अमूर्त सुंदरता की अनुभूति प्रतीत होती हैं। भारत अपनी चारों भौगोलिक दिशाएं

- उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम मैं परम सौंदर्य की अनुभूति को समेटेता है, जिसका भावनात्मक चित्र कवि ने अपनी अनुभूति की प्रमाणिकता से बनाया है।

"चारों ओंरन चारों धाम, पूर्व में जगदीश ललाम।
पश्चिम द्वारका सरनाम, को नहिं जाने।।
बद्रीनाथ बसत उत्तर है, दक्खिन में श्री रामेश्वर हैं।
दर्शन कर लीजै सुंदर है सुनलो स्याने।।"[11]

समग्रत: खेतसिंह यादव 'राकेश' के काव्य में प्रकृति सौन्दर्य एक समग्र जीवन दृष्टि के रूप में उपस्थित है। उनका साहित्य प्राकृतिक सौंदर्य, ग्रामीण संस्कृति, लोकसंवेदना और मानवीय मूल्यों में व्याप्त समग्र प्राकृतिक सौंदर्य का संगम है।

इस दृष्टि से उनका काव्य बुंदेली लोक साहित्य में प्रकृति सौन्दर्य का महत्वपूर्ण और प्रमाणित दस्तावेज है।

संदर्भ ग्रंथ सूची —

1. मोहन की मुरली (चौकड़िया), लेखक खेतसिंह यादव 'राकेश', कुलपहाड़ प्रकाशक – खिलावन सिंह यादव कुलपहाड़, उदाहरण 1-पृष्ठ-12

2. फाग- ऊषा-अनिरुद्ध- लेखक- खेतसिंह यादव 'राकेश' प्रकाशक - खिलावन सिंह यादव कुलपहाड़, उदाहरण _पृष्ठ 2-10 ,5-18, 9-23

3.फाग सिंहदहाड़ - रचयिता- खेत सिंह यादव 'राकेश'उदाहरण _पृष्ठ 3-16, 4-21, 6-20, 7-23, 8-11,10-11,11-26